Q.5 प्रेस की स्वतंत्रता और सुशासन परस्पर अपवर्जी नहीं है। देश के आर्थिक और मानव विकास को प्रोत्साहित करते हुए ये एक-दूसरे को समर्थन प्रदान करते हैं। टिप्पणी कीजिए।

प्रेस की स्वतंत्रता तथा सुशासन दोनों ही एक बेहतर लोकतन्त्र के आवश्यक स्तम्भ हैं। संविधान में प्रेस की स्वतन्त्रता को अन्यत्र भिन्न रूप से वर्णित नहीं किया गया है लेकिन अनुच्छेद 19 में इसकी अभिव्यक्ति अन्तर्निहित है।

सुशासन एक राजनीतिक व्यवस्था की सबसे वांछनीय स्थिति है जिसका अप्रत्यक्ष वर्णन 'राज्य के नीति निदेशक तत्वों' में दिखाई पड़ता है।

प्रेस की स्वतन्त्रता से व्यक्तियों तक सरकार के कामकाज की सही जानकारी पहुँचती है, सरकारी नीतियों की अच्छाईयाँ तथा बुराइयाँ पता चलती है, समाज में लोकतन्त्र के प्रति जागरूकता आती है, लोग शासन को करीब से जान पाते हैं, शासन के बारे में ज्ञान का प्रसार होता है। अन्य विभिन्न माध्यमों से प्रेस की स्वतन्त्रता देश के आर्थिक तथा मानव विकास को प्रोत्साहित करती है।

सुशासन से लोगों के कल्याण की अवधारणा प्रस्तुत की, लोगों को समानता, स्वतन्त्रता, शिक्षा, निजता का अधिकार मिले, यही इसका ध्येय है। भ्रष्टाचार, दुर्व्यवहार इत्यादि का

अंत ही सुशासन के सपने को पूरा किया। सुशासन की पहुँच को लोगों तक पहुँचाने में मीडिया, प्रेस का योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण है। सरकार के विभिन्न महत्वपूर्ण कार्यक्रमों को यह लोगो तक पहुँचाने मे मदद करता है।

प्रेस की स्वतन्त्रता में कई बार आजादी के पहले तथा बाद में प्रतिबन्ध लगाने का प्रयास हुआ। लेकिन कभी भी यह लोकतन्त्र को मजबूत नहीं कर पाया। वर्तमान में प्रेस की स्वतन्त्रता पर वही प्रतिबन्ध जो व्यक्ति की अभिव्यक्ति पर लागू है।

प्रेस के बिना लोकतन्त्र अधूरा है यह सरकार को उत्तरदायी बनाता है तथा तानाशाही से देश की रक्षा करता है, भारत में रूढ़िवादी समाज में प्रेस समाज सुधार का एक प्रमुख साधन है। सुशासन देश की उन्नति, लोगों के विकास एंव खुशहाली का द्योतक होता है।

इंदिरा गाँधी या किसी पार्टी का नाम बिना लिए आपातकाल का जिक्र किया जा सकता है जब अखबारों के हैडलाइन को काला रंग से रंग कर पत्रकारिता को अपंग बनाने की कोशिश की गई थी.

8/20

Total = 42/80